रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 26] नई दिल्ली, शनिवार, जून 26—जुलाई 2, 2004 (आषाढ़ 5, 1926)
No. 26] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 26—JULY 2, 2004 (ASADHA 5, 1926)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I--खण्ड-1--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं 615

भाग I--खण्ड-2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 649

भाग I--खण्ड-3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और अविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 3

भाग I--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 823

भाग II--खण्ड-1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम *

भाग II--खण्ड-1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ *

भाग II--खण्ड-2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) *

भाग II--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश *

भाग III--खण्ड-1--उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं 547

भाग III--खण्ड-2--पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस 4545

भाग III--खण्ड-3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं *

भाग III--खण्ड-4--विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं 2975

भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस 177

भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु की आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक *

CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 615

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 649

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . 3

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence 823

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . . . . . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India 547

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs 4545

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . *

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 2975

PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies 177

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi . . . . . *

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]
[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]
[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 2004

सं. 102-प्रेस/2004--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :--

कांस्टेबल सी स्टेनली, बी एस एफ

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 जुलाई, 2002)

3 जुलाई, 2002 को फुलवामा जिला (जम्मू एवं कश्मीर) के चक इच्छागीड़ गांव के एक मकान में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर सीमा सुरक्षा बल की 10वीं बटालियन की एक टुकड़ी ने उस मकान की घेराबंदी की। जब कांस्टेबल स्टेनली, एक अन्य कांस्टेबल के साथ आतंकवादियों के भाग निकलने का रास्ता रोकने के लिए महत्वपूर्ण स्थान पर मोर्चा संभाल रहे थे उस समय मकान के ऊपरी तल से एक आतंकवादी ने उन पर गोलियों की भारी बौछार कर दी। इन दोनों कांस्टेबलों ने तत्काल जवाबी कार्रवाई शुरू की जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों ने अपना स्थान बदल लिया और भूतल के एक कमरे में चले गए और वहां से गोलीबारी जारी रखी। दोनों ओर से गोलीबारी के दौरान, कांस्टेबल सी. स्टेनली बाएं पैर में गोली लगने से घायल हो गए। अडिग रहते हुए तथा अपने घाव की परवाह किए बिना, उन्होंने मकान के पीछे से उनके छुपकर भागने के मार्ग को रोके रखा और अपने साथी से मकान के पीछे की गली में प्रभावी गोलीबारी जारी रखने को कहा। इसी समय, कांस्टेबल स्टेनली ने मकान से कूद रहे एक आतंकवादी को देखा। व्यक्तिगत सुरक्षा और गोली के घाव की परवाह किए बिना उन्होंने अपना स्थान बदल लिया और सभी ओर गोलीबारी करते रहे। आतंकवादी को साफ देखने के लिए वे खुले में बाहर आए और आतंकवादी के छुपकर भागने के मार्ग को वास्तविक रूप से रोक दिया। तथापि, इस दौरान आतंकवादियों द्वारा चलाई गई एक गोली उनके पेट में लग गई। जानलेवा घाव के बावजूद, बड़े धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ कांस्टेबल स्टेनली ने आतंकवादी पर गोलियों की बौछार कर दी और उसको मौके पर ही मार गिराया। इसके बाद कांस्टेबल स्टेनली गिर पड़े और जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

कांस्टेबल सी स्टेनली ने आतंकवादियों के समक्ष निर्भीक पहलशक्ति, असाधारण साहस, अत्यकृष्ट बहादुरी का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

आईसी-51821 मेजर अजय कोठियाल, शौर्य चक्र
4 गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 मई, 2003)

आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में मिगरानी टुकड़ी द्वारा सूचना मिलने पर मेजर अजय कोठियाल ने एक दल के साथ तत्काल एक रणनीतिक योजना तैयार की और दूसरे मार्ग से एक प्रहारक दल का नेतृत्व करते हुए उस क्षेत्र का घेराव किया जिस क्षेत्र में आतंकवादी घुसे थे और चुपके से पूरी रात उनकी प्रतीक्षा करते रहे।

13 मई, 2003 को 11.00 बजे जैसे ही आतंकवादी छोकों से निकले इन्होंने उन पर तत्काल आक्रमण कर दिया। चार आतंकवादियों ने घबराकर उनकी ओर अंधाधुंध गोलियां बरसाते हुए भागने का प्रयास किया। मेजर अजय कोठियाल, व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना और अदम्य साहस का परिचय देते हुए उनसे प्रभावकारी ढंग से भिड़ गये तथा उनके बच निकलने का रास्ता काट दिया। उन्होंने अचूक निशाना लगाकर चार आतंकवादियों को मार गिराया। इनके कुशल योजना प्रबंध और ऑपरेशन के सफल निष्पादन से सात आतंकवादियों के पूरे दल का सफाया कर दिया गया।

मेजर अजय कोठियाल, शौर्य चक्र ने आतंकवादियों से लड़ते समय सैन्य सूझबूझ, अदम्य साहस, कुशल योजना प्रबंध और उच्च कोटि की असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया।

अरुण मित्रा
निदेशक

संख्या 103–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र–बार" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते है:–

आईसी-45120 लेफ्टि.कर्नल कंवर जयदीप सिंह, शौर्य चक्र, सेना मेडल
6 डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अगस्त, 2002)

लेफ्टि. कर्नल कंवर जयदीप सिंह, नियंत्रण रेखा पर एक यूनिट की कमान संभाल रहे थे । इस यूनिट के पास विस्तृत और अति कठिन सेक्टर था जो दुश्मन की कार्रवाई तथा आतंकवादी घुसपैठ के लिए संवेदनशील है । उन्होंने अपनी बटालियन को दुश्मन के ऊपर पूर्ण आधिपत्य स्थापित करने तथा उन्हें बड़ी संख्या में हताहत करने के लिए प्रेरित किया और उसका नेतृत्व किया ।

18 अगस्त, 2002 को 1530 बजे लेफ्टि. कर्नल कंवर जयदीप सिंह के टोही गश्त दल का सामना अचानक घुसपैठिए आतंकवादियों से हुआ जिसमें उनका एक सैनिक घायल हो गया। उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तत्काल आतंकवादियों का मुकाबला किया और घायल सैनिक को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया । आतंकवादी भाग न जाएं इसके लिए उनका पीछा करने और सफाया करने के लिए उन्होंने गश्त को पुनः व्यवस्थित किया । आतंकवादियों का पीछा करते समय छुपे आतंकवादियों के दूसरे समूह ने गश्त-दल पर गोलीबारी शुरू कर दी । उन्होंने साहसपूर्वक अपने सैनिकों का नेतृत्व किया जिससे आतंकवादी हताहत हुए और भागने के लिए मजबूर हो गए । इस भयंकर गोलीबारी के दौरान उनके गर्दन में गोली लग गई और अपने जवानों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए वे अपने घाव के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

लेफ्टि. कर्नल कंवर जयदीप सिंह, शौर्य चक्र, सेना मेडल ने अपने दल का आगे रहकर नेतृत्व किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान देकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया ।

वरुण मित्रा
निदेशक

संख्या 104–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं:–

1. **जीएस-163981 वाई ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी मोहन सिंह**
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 04 जनवरी, 2003)

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी मोहन सिंह को नागालैंड राज्य के मोन जिले को जोड़ने वाली एक अति महत्वपूर्ण सड़क अबोई-तोहोक की फार्मेशन कटिंग के लिए डिटैचमेंट अबोई में डोज़र ऑपरेटर के रूप में तैनात किया गया था ।

04 जनवरी, 2003 को सुबह 1100 बजे जब फार्मेशन कटिंग का कार्य प्रगति पर था तभी अचानक ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी, मोहन सिंह ने पहाड़ी से गिरता हुआ जमीन का बहुत बड़ा खंड देखा । किंतु वे भागे नहीं और संभावित नुकसान से अपने डोज़र को बचाने के लिए उन्होंने डोज़र को भू-स्खलन से दूर हटाने का प्रयास किया तथा इस प्रक्रिया में भू-स्खलन के साथ आए एक शिला खण्ड से उनकी गर्दन में चोट लग गई । शिला खण्डों के गिरने से लगी चोट के कारण उन्हें उसी दिन मृत घोषित कर दिया गया । ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी, मोहन सिंह के असाधारण साहस और कर्त्तव्यपरायणता के कारण डोज़र बच गया ।

इस प्रकार, ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी मोहन सिंह ने अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में असाधारण कर्त्तव्यपरायणता, अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. **जीएस-160559 डब्ल्यु ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर**
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 10 जनवरी, 2003)

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर को तीन राष्ट्रों अर्थात् भारत, बंगलादेश और म्यांमार सीमा बिंदु पर स्थित लौंगतलाल-डिलटलांग-पावां सड़क की फार्मेशन कटिंग के लिए एक डोज़र पर तैनात किया गया था ।

10 जनवरी, 2003 को वे अपनी मशीन से 161 तथा 162 कि.मी. के बीच फार्मेशन कटिंग का कार्य कर रहे थे । उस दिन कार्य काफी पेचीदा था तथा डोज़र को आगे बढ़ाना खतरे से भरा हुआ था । ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग

मशीनरी सी चंद्र शेखर उस कार्य को निर्भय होकर सूझबूझ, अदम्य साहस और जी तोड़ मेहनत से कर रहे थे । एक स्थान पर डोज़र झुक गया और फिसलने लगा, किंतु ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर ने अपनी मशीन को छोड़ा नहीं बल्कि असाधारण सूझबूझ और कौशल से मशीन को संभाला और उसे पहाड़ी की ओर ले जाने में सफल हो गए । जब मशीन पहाड़ी के नजदीक पहुंची तो अचानक ही भारी भू-स्खलन हो गया जोकि प्रकृति का एक अप्रत्याशित कार्य था। ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर अपनी मशीन के साथ उसी भू-स्खलन में दब गए । केवल उनका सिर दिखाई दे रहा था । किंतु, ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर एक बार भी विचलित नहीं हुए । उन्होंने अपना साहस और धैर्य बनाए रखा । मजदूरों ने उनके आस-पास की मिट्टी हटाई और उन्हें बाहर निकालकर नीचे ले आए । उन्हें गंभीर अंदरूनी चोटें आई थीं, जिसके कारण बाद में वे वीरगति को प्राप्त हो गए ।

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी सी चंद्र शेखर ने अपने कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक निर्वाह करते हुए असाधारण वीरता, अनुकरणीय समर्पण भावना का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. **2488452 सिपाही तरुन कुमार**
16 पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 फरवरी, 2003)

18 फरवरी, 2003 को रसद-सामग्री ले जाने के बारे में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर 1820 बजे जनरल एरिया में दो घात लगाए गए थे । 2100 बजे, एक सैन्य दल ने घात-स्थल में एक ट्रक को प्रवेश करते हुए देखा । ललकारे जाने पर उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी कर दी और हथगोले फेंकते हुए भागने का प्रयास किया । यह भांपते हुए कि आतंकवादी उत्तर की ओर घने जंगलों और भूटान में भाग सकते हैं, सिपाही तरुन कुमार ने भाग रहे आतंकवादियों का पीछा किया और एक आतंकवादी को मार गिराया । इसी बीच, अन्य दो आतंकवादियों ने एक कटाव की आड़ से सिपाही तरुन कुमार पर हथगोला फेंका । अपने साथी द्वारा दी गई आड़ में उत्कृष्ट युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए ये चट्टानी नाले की ओर रेंगते हुए आगे बढ़े और काफी नजदीक से एक आतंकवादी को मार गिराया । बाद में, सिपाही तरुन कुमार ने अपने साथी को गोलीबारी की कारगर आड़ दी जिससे उसने तीसरे आतंकवादी को मार डाला । तीनों आतंकवादी मारे गए तथा एक 7.65 मि.मी. बेरेटा पिस्तौल, एक 12 बोर एसबीबीएल, गोलाबारूद और भारी मात्रा में रसद-सामग्री बरामद हुई ।

सिपाही तरुन कुमार ने आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करने में सूझबूझ और अति उच्च कोटि की विशिष्ट वीरता का प्रदर्शन किया ।

4. **जीएस-173753 के ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी**
कमलेश्वर सिंह

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 फरवरी, 2003)

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह को लेह-चालुंका मार्ग में 39 कि.मी. पर सर्दियों में गिरी बर्फ हटाने के कार्य में लगाया गया था । सर्दियों में भारी हिमपात, तेज हवा और (-)15 डिग्री से (-)35 डिग्री सेंटीग्रेट

तापमान होने के कारण इस क्षेत्र की प्राकृतिक स्थिति प्रतिकूल हो जाती है ।

19-20 फरवरी, 2003 की रात को मौसम का अभूतपूर्व भारी हिमपात हुआ और सम्पूर्ण मार्ग क्षेत्र भारी हिमपात से अवरुद्ध हो गया । हिम-स्खलन के आसन्न खतरे के बावजूद ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह ने पूर्ण कर्तव्य निष्ठा से बुलडोज़र से मार्ग साफ करने के जोखिम भरे कार्य पर लग गए । हिम-स्खलन तथा बर्फ की ढेर के धसने के आसन्न खतरे की परवाह किए बिना ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह बर्फ हटाते रहे । तभी हिम-स्खलन हो गया और ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह अपने डोज़र के साथ उसके नीचे दब गए । काफी कठिनाई से इन्हें बचाया गया । मौत के करीब पहुंच जाने के बावजूद ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह स्वस्थ होते ही अपने कार्य में दृढ़तापूर्वक जुट गए ।

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी कमलेश्वर सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़-निश्चय, निष्ठा तथा कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

5. **एसएस-37489 मेजर किशन बहादुर गुरुंग**
2/4 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 फरवरी, 2003)

22 फरवरी, 2003 को जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में आतंकवादियों के एक दल की मौजूदगी की खुफिया सूचना मिलने के बाद मेजर किशन बहादुर गुरुंग ने उस दल को पकड़ने के लिए अपनी कम्पनी कॉलम के साथ तत्काल कार्रवाई की । मेजर गुरुंग द्वारा खड़ी चट्टानों की ओर से संदिग्ध क्षेत्र पर की गई अप्रत्याशित कार्रवाई से आतंकवादियों द्वारा तैनात किया गया पूर्व चेतावनी दल को हतप्रभ कर दिया । इन्होंने तुरंत सम्पूर्ण क्षेत्र की घेराबंदी कर दी, जिससे आतंकवादी भाग न सकें । इन्होंने पेशेवर परिपक्वता के साथ यह ऑपरेशन चलाया, प्रतिकूल मौसम में भी पूरी रात लड़ाई जारी रखी और गोलीबारी पर कड़ा नियंत्रण बनाकर जवाबी गोलीबारी में अपने सैनिकों को हताहत होने से बचाए रखा। निकास मार्ग से उन्होंने आतंकवादियों के भागने के एक प्रयास को नाकाम कर दिया । अंततः, मेजर किशन बहादुर गुरुंग ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए एक ठोक में घुसे और बहुत ही नजदीक से चार आतंकवादियों को मार गिराया ।

मेजर किशन बहादुर गुरुंग ने प्रतिकूल मौसम में आतंकवादियों से लड़ने में उच्च स्तर की पहलशक्ति, कुशल नेतृत्व, कमान और नियंत्रण तथा स्वयं ही धावा बोलकर अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

6. **124384 राइफलमैन जोसफ हेन्ट्री**
12 असम राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 मार्च, 2003)

राइफलमैन जोसफ हेन्ट्री उस दल में शामिल थे, जिसने मणिपुर में कई निगरानी घात लगाए थे । 11 मार्च, 2003 को 1400 बजे, हथियारों से पूरी तरह लैस छह से आठ आतंकवादी घोड़ा घाटी में जाते हुए देखे गए। आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए सैनिक दल दो टुकड़ियों में उस क्षेत्र की ओर भागा ।

1415 बजे, जैसे ही आतंकवादी मारण क्षेत्र में घुसे, सैन्य दल की दोनों टुकड़ियों ने गोलियों की बौछार कर दी । आतंकवादी भौचक्के रह गए और छोटे-छोटे समूहों में बंटकर अलग-अलग दिशाओं में भागे । उस समय, राइफलमैन जोसफ हेन्ट्री ने अग्रणी आतंकवादी को अपने निकट से भागकर जाते हुए देखा । अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए राइफलमैन जोसफ हेन्ट्री आतंकवादी के सामने कूद पड़े और ही उसका रास्ता रोक लिया । दोनों ओर की गोलाबारी में उन्होंने निकट से आतंकवादी को मार गिराया, किंतु स्वचालित हथियारों से की गई गोलियों की बौछार से उनकी गर्दन और सिर में गोली लग गई, जिससे वे वीरगति को प्राप्त हो गए । इसी दौरान, दल के अन्य सदस्यों ने भयंकर गोलीबारी में तीन और आतंकवादियों को मार गिराया । एक एके-56 राइफल, एक मैग्जीन तथा 45 चक्र गोलियां बरामद की गईं ।

इस प्रकार, राइफलमैन जोसफ हेन्ट्री ने अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना अदम्य साहस का प्रदर्शन किया तथा देश के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

7. **जीएस-160272 लांस ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी जी. रामलिंगम**
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 मार्च, 2003)

ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी जी. रामलिंगम को महत्वपूर्ण फुएंटशोलिंग थिम्पू राजमार्ग, जो भूटान की राजधानी व अन्य महत्वपूर्ण जिलों को भारत से जोड़ता है, पर 5.00 से 17.00 कि.मी. के बीच के राजमार्ग को चौड़ा करने के लिए तैनात किया गया था ।

यह सड़क 5.00 कि.मी. से 17.00 कि.मी. के बीच नरम मिट्टी/शिलाओं वाले एक पहाड़ी ढलान के बीच से गुजरती है । इस क्षेत्र में घने कोहरे, अनवरत बारिश और सभी जगह जोंकों की मौजूदगी के कारण इस सड़क की स्थिति प्रायः बदतर हो जाती है । सड़क के आस-पास अस्थिर भौगोलिक स्तर के कारण सड़क चौड़ी करने का कार्य काफी कठिन होता है । डोजर ऑपरेटर जी रामलिंगम के अपार अनुभव और उत्कृष्ट कौशल को देखते हुए उन्हें इस क्षेत्र में सड़क चौड़ी करने के लिए तैनात किया गया था ।

13 मार्च, 2003 को, जब वे सड़क चौड़ी करने के लिए 11.80 कि.मी. पर डोजर चलाते हुए अपने कार्य में व्यस्त थे, तभी पहाड़ के ऊपर से एक बड़ा सा टुकड़ा नीचे गिरने लगा । उन्हें इस भू-स्खलन से सावधान किया गया, अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए उन्होंने डोजर को क्षणभर में पीछे हटाया ताकि कीमती डोजर बचाया जा सके । किंतु, भारी पहाड़ी टुकड़ा बहुत ही तेजी से नीचे गिरा और ऑपरेटर सहित डोजर मिट्टी में दब गया । उनके साहसिक प्रयासों से निसंदेह डोजर भारी क्षति से तो बच गया, किंतु वे अपने आपको न बचा सके और भू-स्खलन के नीचे दबकर उन्होंने अंतिम सांस ली ।

इस प्रकार, ऑपरेटर एक्सकैवेटिंग मशीनरी जी. रामलिंगम ने अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में अनुकरणीय साहस, उत्कृष्ट समर्पण, अद्वितीय कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बलिदान दिया ।

8. **2485215 लांस नायक गगन सिंह**
19 पंजाब (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 मार्च, 2003)

लांस नायक गगन सिंह उस कम्पनी के रेडियो ऑपरेटर थे जिसने जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में तलाशी और सफाया कार्रवाई शुरू की थी ।

14 मार्च, 2003 को लगभग 1350 बजे, सैन्य टुकड़ी ने दो आतंकवादियों को देखा। स्टॉप ने भागते हुए आतंकवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी और एक आतंकवादी को मार गिराया । दूसरे आतंकवादी ने घने जंगल में भागने का प्रयास किया किंतु कम्पनी कमांडर के साथ लांस नायक गगन सिंह ने भाग रहे आतंकवादी का पीछा किया । आतंकवादी ने उनपर भारी गोलीबारी कर दी । अपने कम्पनी कमांडर और अन्य साथियों के खतरे को भांपते हुए लांस नायक गगन सिंह ने कारगर गोलीबारी करके उस आतंकवादी को घेर लिया । किंतु, उनकी बाई टांग में गोली लग गई । घायल हो जाने के बावजूद उन्होंने उस आतंकवादी का पीछा किया और उसे चट्टानों के पीछे छिपा हुआ पाया । वे लगभग 10 मीटर रेंग कर एक उपयुक्त मोर्चे पर पहुंच गए और अदम्य साहस से आतंकवादी को मार गिराया । आमने-सामने की इस गोलीबारी में दूसरी बार उनकी पीठ के निचले हिस्से में गोली लग गई । वे कमान अस्पताल, उधमपुर में अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

लांस नायक गगन सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस और कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

9. **आई सी-54484 मेजर रंजन चेंगप्पा,**
आर्टिलरी/40 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 अप्रैल, 2003)

02 अप्रैल, 2003 को खोज कार्रवाई के दौरान मेजर रंजन चेंगप्पा जो एक खोजी दस्ते के कमांडर थे, झाड़ियों और गिरे हुए पेड़ की आड़ में छिपे हुए चार आतंकवादियों को देखा । मेजर रंजन चेंगप्पा ने उत्कृष्ट, तीक्ष्ण रणकौशल तथा सूझ-बूझ का परिचय देते हुए एक पेड़ की आड़ लेकर अचूक गोलीबारी की और एक आतंकवादी का तुरंत सफाया कर दिया । आतंकवादियों ने जवाबी कार्रवाई में इस अफसर पर गोलियों की भारी बौछार कर दी । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तथा अदम्य साहस, उत्कृष्ट नेतृत्व और सैनिकोचित सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए यह अफसर आतंकवादी समूह के निकट एक चट्टान तक रेंगकर पहुंचा और दो हथगोले फेंके जिससे दो और आतंकवादियों का सफाया हो गया । इस कार्रवाई में आतंकवादी संगठन के ग्रुप कमांडर सहित सभी चारों दुर्दांत आतंकवादी मारे गए ।

मेजर रंजन चेंगप्पा ने आतंकवादियों से लड़ने में अदम्य साहस, सूझ-बूझ, नेतृत्व तथा व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन किया ।

10. **3987684 नायक प्रकाश चंद चौहान**
3 डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 अप्रैल, 2003)

नायक प्रकाश चंद चौहान जम्मू-कश्मीर में रजौरी जिले के जनरल एरिया में खोजी दल में थे । 09 अप्रैल, 2003 को लगभग 0935 बजे, नायक प्रकाश का सामना बड़ी-बड़ी चट्टानों के पीछे छिपे दो आतंकवादियों से हो गया। आतंकवादियों के साथ गोलीबारी शुरू होते ही इन्हें गोली लग गई । गंभीर रूप से जख्मी हो जाने तथा अत्यधिक रक्त स्राव होने के बावजूद इन्होंने वहां से हटने से इनकार कर दिया और छिपे हुए आतंकवादियों से लगातार लड़ते रहे। अपने साथी द्वारा दी गई गोलीबारी की आड़ में नायक प्रकाश चंद चौहान आतंकवादियों के छिपने के स्थान तक रेंगते हुए पहुंचे और हथगोले फेंके । आतंकवादी गोलीबारी करते रहे । अंत में वे आड़ से बाहर निकले और निजी हथियार से गोलियां बरसाते हुए छिपे हुए आतंकवादियों पर टूट पड़े । दो आतंकवादी मारे गए किंतु दोनों ओर से चली गोलीबारी में इन्हें दो और गोलियां लग गईं । अपना मिशन पूरा करने के बाद ही वे वहां से हटने के लिए तैयार हुए ।

नायक प्रकाश चंद चौहान ने आतंकवादियों का सफाया करने में अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस, वीरता और कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

11. // **13763702 पैराट्रूपर दलीप सिंह**
9 पैरा (स्पेशल फोर्स)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अप्रैल, 2003)

जम्मू-कश्मीर में पुंछ जिले के जनरल एरिया में की गई सैन्य कार्रवाई के दौरान पैराट्रूपर दलीप सिंह पैराशूट रेजिमेंट के बटालियन की एक टीम में थे ।

लगभग 1900 बजे पैराट्रूपर दलीप सिंह ने घात स्थान पर अपने मोर्चे से 400 मीटर पूर्व दिशा में तीन आतंकवादियों को जाते हुए देखा । यह भांपते हुए कि आतंकवादी भाग रहे हैं, पैराट्रूपर दलीप सिंह आक्रामक भावना और पहलशक्ति का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी को पकड़ने के लिए अपने साथी के साथ तुरंत चल पड़े । पैराट्रूपर दलीप सिंह ने अपने साथी को रुक कर आड़ देने के लिए कहा और तुरंत साहसिक कार्रवाई तथा जमीन का उत्कृष्ट उपयोग करते हुए आतंकवादियों के दल के निकट पहुंचकर उन्हें रोक लिया और नजदीकी लड़ाई में उस दल के दो आतंकवादियों को मार डाला । अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना तथा असाधारण वीरता का प्रदर्शन करके पैराट्रूपर दलीप सिंह ने अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए भाग रहे एक अन्य आतंकवादी का पीछा किया और उसे भी बहुत ही नजदीक से मार गिराया ।

पैराट्रूपर दलीप सिंह ने असाधारण वीरता, अत्यधिक सूझ-बूझ, पहलशक्ति का प्रदर्शन किया तथा अपनी सुरक्षा की किंचित भी परवाह न करते हुए अकेले ही तीन विदेशी आतंकवादियों का सफाया कर दिया ।

12. **4193303 सिपाही नरेन्द्र सिंह**
8 कुमाऊं

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अप्रैल, 2003)

14 अप्रैल, 2003 को सिपाही नरेन्द्र सिंह घात-दल के कमांडर के साथी थे । 0430 बजे, घात-दल स्काउट ने रास्ते में 8-10 व्यक्तियों की गतिविधियां देखी । जब ये लोग काफी निकट आ गए तो दल के सेकंड-इन-कमान ने उन्हें ललकारा । आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी में दो आतंकवादी मारे गए । इसी बीच, दो आतंकवादियों को भागने का प्रयास करते हुए देखा गया और अपने दल के कमांडर के साथ सिपाही नरेन्द्र सिंह ने अपने ऊपर की जा रही भारी गोलीबारी की परवाह किए बिना तुरंत आतंकवादियों का पीछा किया । दल का कमांडर एक आतंकवादी से भिड़ गया और उसे मार गिराया । सिपाही नरेन्द्र सिंह ने दूसरे आतंकवादी का पीछा किया और बहुत ही निकट पहुंचकर उसे भी मार डाला । इस सफल ऑपरेशन से भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ ।

इस प्रकार, सिपाही नरेन्द्र सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में आक्रामक युद्ध भावना, पहलशक्ति, उत्कृष्ट तथा निःस्वार्थ वीरता दिखाई ।

13. **2692200 ग्रेनेडियर यशपाल सिंह**
ग्रेनेडियर्स/29 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अप्रैल, 2003)

22 अप्रैल, 2003 को, उत्तरी सेक्टर के एक गांव में घेराबंदी तथा तलाशी कार्रवाई की जा रही थी । घर-घर की तलाशी ली जा रही थी । जब ग्रेनेडियर यशपाल सिंह और उसके साथी एक विशेष घर की तलाशी के लिए आगे बढ़े तभी एक आतंकवादी ने गौ-बाड़ा से निकल बहुत ही निकट से ग्रेनेडियर यशपाल सिंह पर अंधाधुंध गोलियां बरसाते हुए भागने का प्रयास किया । अधिकांश गोलियां बुलेट प्रूफ जैकेट से टकराई किंतु एक गोली जैकेट की प्लेट के ऊपरी किनारे से फिसलती हुई सीने के ऊपरी हिस्से में घुस गई । हालांकि ग्रेनेडियर यशपाल सिंह गंभीर रूप से जख्मी हो गए थे, फिर भी उन्होंने लड़खड़ाते हुए उस आतंकादी का पीछा किया और उसे मार डाला । दूसरा आतंकवादी भी गौ-बाड़ा से बाहर निकला और ग्रेनेडियर यशपाल सिंह पर पीछे से गोली चलाकर उन्हें और घायल कर दिया । ग्रेनेडियर यशपाल सिंह विचलित हुए बिना पीछे मुड़े और दूसरे आतंकादी पर टूट पड़े और वीरगति को प्राप्त होने से पहले उसे भी मार डाला ।

ग्रेनेडियर यशपाल सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में उच्चकोटि की वीरता, साहस और सैनिकोचित सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

14. **4475890 लांस नायक हरमेल सिंह**
16 सिख लाइट इन्फैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 मई, 2003)

4 मई, 2003 को 2000 बजे जनरल एरिया के दक्षिण में मेघालय की ओर जा रहे कुछ आतंकवादियों के बारे में प्राप्त एक विशिष्ट सूचना के आधार पर कम्पनी कमांडर ने आतंकवादियों को घात लगाकर पकड़ने के लिए तत्काल एक योजना बनाई । लांस नायक हरमेल सिंह ने निगरानी दल का नेतृत्व किया ।

2300 बजे चौकन्ने नायक हरमेल सिंह ने दो आतंकवादियों को घात टुकड़ी से लगभग 100 मीटर पूर्व घनी झाड़ियों में जाते हुए देखा । एक पल गंवाए बिना लांस नायक हरमेल सिंह ने पहले से निर्धारित संकेत के माध्यम से इस गतिविधि की सूचना तत्काल दल के कमांडर को दी । वे अपने कम्पनी कमांडर और तीन अन्य सैनिकों के साथ आतंकवादियों का रास्ता रोकने के लिए उनकी ओर बढ़े । ललकारे जाने पर आतंकवादियों ने घनी झाड़ियों और ऊबड़-खाबड़ भूमि की आड़ लेते हुए तुरंत ही अंधाधुंध गोलीबारी कर दी और हथगोले फेंके । दल के कमांडर ने आतंकवादियों पर अचूक गोलीबारी करने के लिए 51 एम.एम. बोर से प्रकाश करने का आदेश दिया । जैसे ही उस क्षेत्र में रोशनी हुई लांस नायक हरमेल सिंह ने दो आतंकवादियों को पीछे हटते और भागने का प्रयास करते हुए देखा । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना और दृढ़ साहस का प्रदर्शन करते हुए वे आड़ से बाहर निकले और भारी गोलीबारी की तनिक भी परवाह किए बिना वे आतंकवादियों के निकट पहुंचे और बहुत ही नजदीक से गोलीबारी करते हुए दोनों आतंकवादियों को मार गिराया ।

लांस नायक हरमेल सिंह ने दो दुर्दान्त आतंकवादियों को मारने में उत्कृष्ट सूझ-बूझ, कौशल तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

15. **एसएस-37189 मेजर लक्ष्मण सिंह चौहान**
16 सिख लाइट इन्फैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 मई, 2003)

जनरल एरिया में आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में प्राप्त विशिष्ट सूचना के आधार पर मेजर लक्ष्मण सिंह चौहान ने गश्ती दल का नेतृत्व किया । 09 मई, 2003 को 0820 बजे अग्रणी स्काउट ने चार-पांच आतंकवादियों के एक दल को जाते देखा । ललकारे जाने पर आतंकवादियों ने सैन्य टुकड़ियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी तथा हथगोले फेंके । 50 मिनट तक जारी भारी गोलीबारी तथा संघर्ष के दौरान मेजर लक्ष्मण सिंह चौहान ने असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए बिल्कुल नजदीक की गोलीबारी में तीन आतंकवादियों को गंभीर रूप से घायल कर दिया । एक आतंकवादी घावों के कारण मर गया । दूसरे आतंकवादी को उनके साथी ने मार गिराया ।

एक अन्य ऑपरेशन में सक्रिय तथा साहसिक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए मेजर लक्ष्मण सिंह चौहान ने दो आतंकवादियों को मार गिराया जो सड़क पर बने लकड़ी के पुल पर आई ई डी बिछा रहे थे । उनके इस कार्य से सुरक्षा बल कार्मिकों को जान माल की भारी क्षति से बचाया जा सका जो संभवतः बाद में आई ई डी के फटने से हो सकती थी ।

मेजर लक्ष्मण सिंह चौहान ने साहसिक पहलशक्ति, असाधारण साहस का प्रदर्शन किया तथा अपने उत्तरदायित्व के क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों का कारगर ढंग से दमन किया ।

16. **आईसी-60520 कैप्टन क्रिशन यादव, सेना मेडल**
सेना सेवा कोर/5 बिहार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 मई, 2003)

22 मई, 2003 को कैप्टन क्रिशन यादव आतंकवादी विरोधी ऑपरेशन में स्टॉप पार्टी कमांडर थे । उन पर गोलीबारी होने पर स्वचालित हथियारों से युक्त बारह आतंकवादी भाग कर चट्टानों के पीछे जाकर छिप गए । कैप्टन क्रिशन यादव ने देखा कि चार आतंकवादी दुर्जेय स्थान से गोलीबारी करके हमारे स्टॉप संख्या 1 को घेर रहे थे जिससे अन्य आतंकवादी आसानी से बचकर निकल सकें । इस दल को समाप्त करने की आवश्यकता को महसूस करते हुए ये अफसर अपने साथी के साथ सौ मीटर तक रेंगकर आगे बढ़े तथा भारी स्वचालित हथियारों की गोलीबारी से अविचलित रहते हुए उन्होंने बिल्कुल नजदीक जाकर तीन आतंकवादियों को मार गिराया जबकि चौथा आतंकवादी उनके साथी द्वारा मारा गया ।

कैप्टन क्रिशन यादव की वीरतापूर्ण कार्रवाई से प्रेरित होकर अन्य स्टॉप पार्टियों की संयुक्त कार्रवाइयों के परिणामस्वरूप बारह आतंकवादियों का सफाया हो गया तथा 9 एके राइफल, तीन पिस्तौल तथा बड़ी मात्रा में गोलाबारूद तथा विस्फोटक सामग्री बरामद की गई ।

कैप्टन क्रिशन यादव ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अद्वितीय अदम्य साहस, पहलशक्ति तथा समर्पण भावना का प्रदर्शन किया ।

17. **जेसी-578903 सूबेदार मोहम्मद सादिक**
15 जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 मई, 2003)

27 मई, 2003 को सूबेदार मोहम्मद सादिक ने उत्तरी सेक्टर में चलाए गए एक ऑपरेशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। आतंकवादियों के दल की गतिविधियों के बारे में सूचना मिलने पर सूबेदार सादिक ने एक वन क्षेत्र के दक्षिणी भाग को घेर लिया । खड़ी चट्टानों तथा घनी झाड़ियों के कारण देखने तथा चलने में बाधा बनी हुई थी । लगभग 0750 बजे सूबेदार सादिक ने देखा कि तीन आतंकवादी घनी झाड़ियों से गोलीबारी कर रहे थे और अपनी जगह भी बदल रहे थे । उन्होंने उनकी हरकत पर नजर रखी तथा अपने स्टापों को फिर से तैनात किया और खड़ी चट्टानों के कगारों से रेंगकर आतंकवादियों के निकट आए । अपने पर पांच ग्रेनेड हमले होने के बावजूद, हौंसला बुलंद रखते हुए सूबेदार सादिक खतरनाक हद तक उनके नजदीक गए तथा आक्रामक जवाबी कार्यवाही करते हुए एक आतंकवादी को तुरंत मार डाला तथा अन्य दो को घायल कर दिया । उन्होंने फुर्ती से क्षेत्र को घेर लिया तथा निर्भीकता से गोलीबारी करते हुए दूसरे जख्मी आतंकवादी को मार डाला तथा तीसरे भागते हुए आतंकवादी का पीछा करके उससे गुत्थम-गुत्था होकर उसे भी मार डाला । तीनों के राइफलें, दो रेडियो सैट तथा युद्ध संबंधी भण्डार आदि बरामद किए गए ।

सूबेदार मोहम्मद सादिक ने आतंकवादियों के समक्ष लड़ाई में उत्कृष्ट बहादुरी, असाधारण पहलशक्ति तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

18. **3402400 सिपाही गुरतेज सिंह**
सिख/16 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 जून, 2003)

03 जून, 2003 को सिपाही गुरतेज सिंह को आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने को घेरने के लिए एक स्टॉप पर तैनात किया गया था । लगभग 1930 बजे सिपाही गुरतेज सिंह आतंकवादियों के ठिकाने से की गई गोलीबारी की चपेट में आ गए । बच निकलने की कोशिश में तीन आतंकवादी हवा में बंदूकें लहराते हुए छिपने के ठिकाने से बाहर आए तथा नाले में घुस गए । अपने ऊपर बरस रही गोलियों से अविचलित तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना इस युवा निडर सिपाही ने अपनी लाइट मशीनगन उठाई तथा भागते हुए आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे । नजदीक की लड़ाई में सिपाही गुरतेज सिंह ने एक आतंकवादी को काबू में कर लिया तथा उसकी राइफल छीनकर उसे मार डाला । दूसरे आतंकवादी का सफाया करने के प्रयास में वे भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए तथा घातक रूप से घायल हो गए । गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद सिपाही गुरतेज चुपके से रेंगकर दूसरे आतंकवादी के पीछे पहुंचे तथा गजब की फुर्ती से उस पर झपट पड़े तथा उसकी गर्दन तोड़ डाली । दो आतंकवादियों को मारने के बाद वे, घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले तीसरे आतंकवादी से लड़ते रहे, जो बाद में मारा गया ।

सिपाही गुरतेज सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ निश्चय, असाधारण आक्रामक युद्ध भावना का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

19. **4555974 हवलदार सूबे सिंह**
महार 30 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 जून, 2003)

11 जून, 2003 को जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के एक गांव में घेराबंदी तथा तलाशी ऑपरेशन के दौरान जब एक घर की तलाशी ली जा रही थी तो हवलदार सूबे सिंह की पार्टी पर घर के अंदर भूमिगत ठिकाने से अत्यधिक कारगर गोलीबारी हो गई । अपने साथियों की सुरक्षा को खतरे में पड़ते देख हवलदार सूबे सिंह व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना रेंगकर छिपने के ठिकाने के तंग द्वार, जिसमें से गोलीबारी हो रही थी, के निकट पहुंचे तथा धुंए के और उच्च विस्फोटक हथगोले फेंके जिससे ठिकाने के अंदर चार में से दो आतंकवादी मारे गए । छिपने के ठिकाने से बाहर आने के लिए प्रयासरत तीसरे आतंकवादी को भी उन्होंने नजदीक से मार गिराया । हवलदार सूबे सिंह के इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई से चार आतंकवादी मारे गए तथा उनकी अविलम्ब कार्रवाई से लड़ाई के दौरान घर के भीतर फंसे उनके साथियों की जान बच गई ।

हवलदार सूबे सिंह ने आतंकवादियों के समक्ष लड़ाई में विलक्षण पहलशक्ति, अदम्य साहस, दृढ़ता और असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया ।

20. **जेसी-306681 नायब सूबेदार अलीसाहिब जाफरसन**
इंजीनियर्स/1राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जून, 2003)

विशिष्ट आसूचना के आधार पर 17 जून, 2003 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिला में तलाशी तथा ध्वंस ऑपरेशन शुरू किया गया था । लगभग 1600 बजे नायब सूबेदार अलीसाहिब जाफरसन ने घरों के एक समूह की घेराबंदी की जिसमें दो आतंकवादियों की उपस्थिति की सूचना मिली थी । यह भांपते हुए कि वे सभी ओर से घिर गए हैं आतंकवादियों ने एक घर से खिसकने की कोशिश की तो नायब सूबेदार अलीसाहिब जाफरसन ने तुरंत नजदीक से अचूक निशाना लगाकर मौके पर ही एक आतंकवादी को मार डाला । व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना नायब सूबेदार अलीसाहिब जाफरसन ने घेरा तोड़कर भागने की कोशिश कर रहे दूसरे आतंकवादी को धर दबोचा । आतंकवादी की भारी गोलीबारी के बावजूद उन्होंने अचूक गोलीबारी करके आतंकवादी को मौके पर मौत के घाट उतार दिया । मरने से पहले आतंकवादियों ने गोलियों की बौछार कर दी जो नायब सूबेदार अलीसाहिब जाफरसन के चेहरे पर लगी जिससे बाद में घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए ।

नायब सूबेदार जाफरसन ने आतंकवादियों के समक्ष लड़ाई में अदम्य साहस तथा बहादुरी का परिचय दिया और भारतीय सेना की उच्च परंपराओं के अनुसार सर्वोच्च बलिदान दिया ।

21. **9096831 राइफलमैन जाविद अहमद खांडे**
जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री/46 राष्ट्रीय राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 जून, 2003)

राइफलमैन जाविद अहमद खांडे घुसपैठ छद्म दल के सम्पर्क व्यक्ति के रूप में कार्यरत थे । 18 जून, 2003 को आतंकवादियों तथा हमारी गोलीबारी के अत्यधिक खतरे के बावजूद वे आतंकवादी दल को लुभा कर सेना के घात स्थान पर ले गए । इस प्रकार शुरू हुई लड़ाई में छर्रों के अनेक घाव लगने के बावजूद राइफलमैन जाविद अहमद खांडे ने एंबुश के लिए स्टॉप स्थिति संभाली तथा बिल्कुल नजदीक से एक आतंकवादी पर गोली दागी जिससे वह घातक रूप से घायल हो गया । उन्होंने एक आतंकवादी का सफाया कर दिया तथा दूसरे आतंकवादी का भी सफाया इन्होंने ही किया ।

राइफलमैन जाविद अहमद खांडे ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में असाधारण सूझ-बूझ तथा उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया ।

22. **एसएस-36831 मेजर राकेश शर्मा**
आर्टिलरी/18 राष्ट्रीय राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 जून, 2003)

मेजर राकेश शर्मा उत्तरी सैक्टर में एक पोस्ट के कंपनी कमांडर थे । 25 जून, 2003 को आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने के बाद इस अफसर ने नजदीक के एक गांव में रणकौशल से घात लगाने की

योजना बनाई । प्रवीणता से आतंकवादियों को अचम्भे में डालते हुए इस अफसर ने चुपके से स्टॉप लगाकर क्षेत्र को कारगर ढंग से सील कर दिया । जब एक घर को घेरने के लिए वे दल का नेतृत्व कर रहे थे तो अचानक घर से बाहर आ रहे आतंकवादियों से उनका सामना हो गया । इस अफसर ने धैर्य रखा तथा एक त्वरित कार्रवाई में दो आतंकवादियों को मार गिराया । यह गोलीबारी घुप अंधेरे में हुई । व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपनी पहलशक्ति से यह अफसर रेंगकर आतंकवादियों के निकट पहुंचे । दो आतंकवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी । इस अफसर ने बगल से बिल्कुल नजदीक आकर दोनों आतंकवादियों को मार गिराया । इस अफसर ने ऑपरेशन में मारे गए पांच आतंकवादियों में से चार को मार गिराया ।

मेजर राकेश शर्मा ने विशिष्ट शौर्यपूर्ण कार्रवाई, सटीक योजना, अदम्य साहस, निर्भीक कार्रवाई तथा संकट में निश्चयात्मक नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

23 **2893550 राइफलमैन देविन्द्र सिंह**
राजपूताना राइफल/9 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 जून, 2003)

26 जून, 2003 को लगभग 1950 बजे आतंरिक कार्डन पर, जिसमें राइफलमैन देविन्द्र सिंह शामिल थे, आतंकवादियों द्वारा अपने कब्जे वाले एक घर से स्वचालित हथियारों तथा हथगोलों से कारगर तथा सघन आक्रमण किया गया । राइफलमैन देविन्द्र सिंह चुपके से रेंगकर घर की खिड़की के पास पहुंचे और अंदर एक हथगोला फैंका । चार आतंकवादी घर से बाहर निकले तथा स्टॉपों पर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे । स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, एक तीव्र कार्रवाई में, अदम्य भावना का प्रदर्शन करते हुए राइफलमैन देविन्द्र सिंह जोखिम उठाते हुए आड़ से बाहर आए तथा भयंकर लड़ाई में आतंकवादियों से भिड़ गए और एक को मार गिराया । प्रतिकूल स्थिति में व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे बार-बार आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करते रहे । इस बहादुर सिपाही की दाईं बांह तथा छाती में गोलियों की बौछार आ लगी । यद्यपि अत्यधिक रक्तस्राव हो रहा था और वे मरणासन्न हो रहे थे फिर भी वे मानसिक रूप से सचेत रहे तथा कर्तव्य से बढ़कर उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन करते हुए वे आतंकवादियों पर टूट पड़े और उस क्षेत्र को अपने निजी हथियार से गोलियों की बौछार करके पाट दिया तथा एक और आतंकवादी को मार डाला । एक गोली उनके हथियार की बैरल में लगने से उनका हथियार जाम हो गया । अपने जीवन की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए उन्होंने तीसरे आतंकवादी को दबोच लिया तथा गुत्थम-गुत्था होकर आतंकवादी से हथियार छीन लिया तथा बिल्कुल नजदीक से उसको गोली मार दी । यद्यपि वे हिलने में असमर्थ थे फिर भी उन्होंने अपने साथी का आह्वान किया तथा चौथे आतंकवादी का सफाया करने का निर्देश दिया । इसके शीघ्र बाद ही यह शूरवीर सिपाही शहीद हो गया ।

राइफलमैन देविन्द्र सिंह ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों के साथ लड़ाई में विशिष्ट बहादुरी, पहलशक्ति तथा निर्भीक कार्रवाई का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

24. **जीएस-171109 बाई ऑपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी सतीसन एन (मरणोपरांत)**

तथा

25. **जीएस-171376 ए एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह (मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 जून, 2003)

ऑपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी सतीसन एन तथा एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह सिक्किम के पूर्वी जिले में जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर अनुरक्षण तथा सड़क सुधार के लिए तैनात किए गए थे ।

दिनभर के कार्य से लौटने के बाद 26 जून, 2003 को लगभग 1700 बजे उन्हें जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर 21 से 23 कि.मी. के बीच दो स्थानों पर सड़क अवरुद्ध होने तथा सक्रिय भू-स्खलन होने की सूचना दी गई थी । भारी वर्षा हो रही थी तथा धुंध के कारण दिखाई भी कम दे रहा था । दिनभर के कठिन परिश्रम तथा थकान की परवाह किए बिना ओईएम सतीसन एन एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह के साथ अपनी जेसीबी को लेकर तुरंत भू-स्खलन को हटाने के लिए चल दिए । अवरुद्ध स्थानों पर अभी भी मलबा गिर रहा था । पहाड़ों से पत्थर लुढ़क कर नीचे गिर रहे थे । ओईएम सतीसन एन तथा एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना निरंतर कार्य कर भू-स्खलन को हटाया ताकि फंसे हुए वाहन तथा यात्री भूस्खलन को पार कर सके ।

सभी फंसे हुए वाहनों/यात्रियों के निकलने के बाद जब भू-स्खलन की सफाई अंतिम चरण में थी तभी नाले में बड़े-बड़े पत्थरों सहित बाढ़ आ गई । इसमें जेसीबी, इसके ऑपरेटर ओईएम सतीसन एन और एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह फंस गए और तीनों गहरी घाटी में नीचे बह गए जिससे ऑपरेटर की तत्काल मृत्यु हो गई तथा एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह भी बुरी तरह से जख्मी हो गए जो सुरक्षित स्थान पर ले जाते समय जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

ऑपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी सतीसन एन और एमटी/ड्राइवर मलविंदर सिंह ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर फंसे हुए यात्रियों और वाहनों को बचाने में अदम्य साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया ।

26. **जेसी-225654 सूबेदार जीत सिंह**

असम/35 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 जून, 2003)

सूबेदार जीत सिंह जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में खोजी पार्टी कमांडर के रूप में कार्य कर रहे थे । 29 जून, 2003 को 1500 बजे खोजी दल पर पास के नाले में छिपे आतंकवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की गई । सूबेदार जीत सिंह ने अपनी टुकड़ी को तुरंत पुनः संगठित किया और दक्षिण पश्चिमी दिशा से बच निकलने के रास्तों को बंद कर दिया । उसके बाद वे अपने साथी के साथ आगे बढ़े और आतंकवादी के निकट पहुंचे और निकट से एक आतंकवादी को मार गिराया । इसी समय, घास के ढेर में छिपे एक अन्य आतंकवादी ने उन पर हथगोला फेंका जिससे उनके पेट में घाव हो गया । आंशिक रूप से अंगघात होने के बावजूद व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना सूबेदार जीत सिंह, अडिग साहस, धैर्य और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन करते हुए उस आतंकवादी पर टूट पड़े और नजदीक से उसका सफाया कर दिया । उसके बाद वे जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

सूबेदार जीत सिंह ने आतंकवादियों का सफाया करने में अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

27.

आईसी-52459 मेजर सुरेन्द्र होरा, सेना मेडल
मराठा लाइट इन्फैंट्री, 17 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 जुलाई, 2003)

जम्मू-कश्मीर के बनिहाल जिले के जनरल एरिया में आतंकवादियों की उपस्थिति की सूचना मिलने पर मेजर सुरेन्द्र होरा ने आतंकवादियों को सफाया करने के लिए योजना बनाई तथा ऑपरेशन का नेतृत्व किया ।

28 जुलाई, 2003 को 1300 बजे 150 मीटर की दूरी पर कुछ हलचल भांपते हुए मेजर सुरेन्द्र होरा अपने साथी के साथ चुपके से रेंगते हुए आगे बढ़े । अचानक 15 मीटर की दूरी पर उनका आतंकवादियों के एक दल से सामना हो गया। मेजर सुरेन्द्र होरा ने तुरंत गोलीबारी शुरू की तथा एक आतंकवादी को मार डाला । आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी से जवाब दिया तथा मेजर सुरेन्द्र होरा पर हथगोला फेंका । भारी गोलीबारी में वे रेंगते हुए आगे बढ़े, दूसरे आतंकवादी को मार डाला तथा तीसरे आतंकवादी, जिसने एक आत्मघाती कार्रवाई में अचानक उन पर आक्रमण किया, को 10 मीटर की दूरी पर जख्मी किया । फौलादी इरादों का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने गोली चलाने वाले आतंकवादी के हथियार की बैरल को झपट कर पकड़ लिया । मेजर सुरेन्द्र होरा की दोनों टांगों में गोलियों की बौछार आ लगी । चोट लगने के बावजूद वे आतंकवादी के साथ भिड़े रहे, उसका हथियार छीन लिया और उसे मार डाला ।

इस तरह मेजर सुरेन्द्र होरा ने तीन आतंकवादियों को मारने में आक्रामक भावना, सूझ-बूझ तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

28.

आईसी-45642 लेफ्टिनेंट कर्नल रेड्डी वेंकटेशा,
9 जाट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 सितंबर, 2003)

लेफ्टिनेंट कर्नल रेड्डी वेंकटेशा नौशेरा सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर तैनात की गई जाट रेजिमेंट यूनिट के सेकिंड-इन-कमान थे । 18 सितंबर, 2003 को शक्तिशाली शत्रु दल ने नौशेरा सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर एक चौकी पर हमला करने का प्रयास किया । लेफ्टिनेंट कर्नल रेड्डी वेंकटेशा ने असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए तथा शत्रु की भारी गोलीबारी की परवाह किए बिना गोलीबारी की आड़ देने वाले समूह को तुरंत संगठित किया तथा आगे से नेतृत्व करते हुए आक्रमणकारी दल को नाकाम करने के लिए निकट पहुंचे । अचानक तीव्र गोलीबारी से शत्रु पूर्णतः स्तब्ध रह गया । गोलीबारी की आड़ देने वाले समूह का मार्गदर्शन करते हुए मोर्टार की भारी गोलाबारी तथा तोप के गोलों को पार करते हुए वे बहादुरी से आगे बढ़े जिसके फलस्वरूप एक शत्रु सैनिक मारा गया तथा नियंत्रण रेखा के पार गोलीबारी बेस के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे शत्रु के दो बंकर नष्ट हुए । सघन गोलीबारी के मध्य इस साहसिक कार्य प्रदर्शन से गोलीबारी की आड़ देने वाला समूह खतरे को नजरंदाज करने तथा शत्रु को नष्ट करने के लिए प्रेरित हुआ जिससे हमारा त्वरित कार्रवाई दल शत्रु का सफाया करने और उसे पीछे हटने पर मजबूर करने में सक्षम हुआ । उनके उत्कृष्ट शौर्य के फलस्वरूप आठ शत्रु सिपाही मारे गए तथा शत्रु की लड़ने की हिम्मत को तोड़ आक्रमण को विफल कर दिया ।

लेफ्टिनेंट कर्नल रेड्डी वेंकटेशा ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट बहादुरी, अद्वितीय आक्रामकता तथा अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया ।

29. **आईसी-57219 मेजर उदय सिंह, सेना मेडल**
22 पैरा (विशेष बल) (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 नवंबर, 2003)

मेजर उदय सिंह ने जम्मू-कश्मीर के रजौरी जिले के जनरल एरिया में बाहर रह रहे कार्यकर्ताओं द्वारा आतंकवादियों को उपलब्ध कराई जा रही आसूचना तथा संभारिकी नेटवर्क को नष्ट करने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम बनाया था । इस अफसर ने 29 नवंबर, 2003 को 0300 बजे जनरल एरिया में तलाशी और सफाया ऑपरेशन चलाया । दल ने घने वृक्षों से आच्छादित क्षेत्र में व्यवहारिक रूप से टोह लगाई। 1745 बजे धुंधली रोशनी में जब अफसर घात लगाने के लिए अपने दल का नेतृत्व कर रहा था तो, अचानक पार्टी का सामना आतंकवादियों के समूह से हुआ जो 10 मीटर की दूरी पर उंचाई से उनके निकट आ रहे थे । परिणामस्वरूप हुई घातक लड़ाई के दौरान, इस अफसर की गर्दन में गोली लगी जबकि उनका साथी अनेक गोलियां लगने से घायल हो गया । व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए यह अफसर आतंकवादियों की ओर आगे बढ़ते रहे तथा एक आतंकवादी को मार डाला और दूसरे को घायल कर दिया । मेजर उदय सिंह ने वीरगति को प्राप्त होने से पहले घातक रूप से घायल साथी को बचाने में सहायता की ।

मेजर उदय सिंह ने आतंकवादियों का सामना करते हुए अदम्य साहस तथा कर्त्तव्य से बढ़कर अनुकरणीय नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

30. **2252 जे कांस्टेबल राजकुमार**
जम्मू-कश्मीर पुलिस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 जनवरी, 2004)

02 जनवरी, 2004 को लगभग 1850 बजे दो आतंकवादियों ने भीड़-भाड़ वाले जम्मू रेलवे स्टेशन पर अंधाधुंध गोली चलाई तथा हथगोला फेंका । इस घटना का पता चलने पर पुलिस के त्वरित कार्रवाई दल तथा सेना तुरंत घटना स्थल पर पहुंचे । कांस्टेबल राजकुमार पुलिस दल में शामिल थे ।

लगभग 2020 बजे एक आतंकवादी ने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोली चलाई । कांस्टेबल राजकुमार ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की तथा तलाशी दल को मोर्चा संभालने के लिए कहा । व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे आगे बढ़ते रहे तथा इस दौरान गोलियां लगने से घायल हो गए । वे जमीन पर गिर पड़े और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने से मना कर दिया और त्वरित कार्रवाई दल का नेतृत्व करने वाले अफसर को आतंकवादी के ठिकाने का संकेत दिया जिससे उसका तुरंत सफाया किया जा सका । बाद में वे घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

कांस्टेबल राजकुमार ने बहादुरी, अदम्य साहस का प्रदर्शन किया तथा भारतीय पुलिस की उच्च परम्परा के अनुरूप अपने प्राण न्यौछावर कर दिया ।

वरुण मित्रा
निदेशक

दिनांक 8 जून 2004

सं. 101-प्रेस/2004--भारत के राजपत्र के भाग 1, खण्ड I में 11 मार्च, 2000 को प्रकाशित ''उल्लेख पत्रों'' के संबंध में इस सचिवालय की 15 अगस्त, 1999 की अधिसूचना सं. 28-प्रेस/2000 में निम्नलिखित संशोधन किया जाता है :--

क्रम सं. 63 पर

वारंट अफसर पी. के. गोयल (261134) रेडार फिटर--के स्थान पर

वारंट अफसर पी. के. गोयल (262134) रेडार फिटर--पढ़ा जाए।

वरुण मित्रा
निदेशक

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 1 जून 2004

संकल्प

सं. एफ. 21-2/2003-टी.एस. III-भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय के विभिन्न न्यायिक निर्णयों के अनुसरण में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने 26 फरवरी, 2004 को भारत के राजपत्र असाधारण (भाग-III, खण्ड 4) में प्रकाशित 21 जनवरी, 2004 की अधिसूचना संख्या 37-3/विधिक/2004 द्वारा इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला और शहर आयोजना, फोर्मेसी, अनुप्रयुक्त कला, एम.बी.ए., एम.सी.ए., होटल प्रबन्धन एवं केटरिंग प्रौद्योगिकी आदि में डिप्लोमा, डिग्री एवं स्नातकोत्तर डिग्री चलाने वाले अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् द्वारा अनुमोदित सभी संस्थाओं/विश्वविद्यालयों में अनिवासी भारतीयों (एन.आर.आई.), विदेशी राष्ट्रिकों (एफ.एन.) और भारतीय मूल के व्यक्तियों के दाखिले के सम्बंध में विस्तृत दिशा निर्देश/विनियम जारी किए हैं। इन विनियमों के अन्तर्गत खाड़ी देशों में भारतीय श्रमिकों के बच्चों सहित उपर्युक्त संवर्गों के विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त रूप में विभिन्न विषयों के लिए कुल सीटों (अनुमोदित दाखिला क्षमता) का (15 %) पन्द्रह प्रतिशत आरक्षित किया गया है।

1. उपर्युक्त अधिसूचना को ध्यान में रखते हुए सम विश्वविद्यालयों अथवा सरकारी वित्त पोषित संस्थाओं सहित स्ववित्तपोषी संस्थाओं अथवा विश्वविद्यालय विभागों में अवरस्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर उपर्युक्त तकनीकी पाठ्यक्रमों के अध्ययन के लिए विदेशी राष्ट्रिकों, अप्रवासी भारतीयों, भारतीय मूल के व्यक्तियों को अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी करने की परिपाटी समाप्त करने का मामला भारत सरकार के विचाराधीन था। गहन विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया है कि उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में उपर्युक्त श्रेणियों के व्यक्तियों को उन संस्थाओं में दाखिला लेने के लिये सरकार से अनापत्ति प्रमाण-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य नहीं होगा और उनका दाखिला समय-समय पर यथा संशोधित उपर्युक्त अधिसूचना द्वारा विनियमित होगा। तथापि उपर्युक्त सभी संवर्गों के विद्यार्थियों को दाखिला देने वाली ऐसी सभी शैक्षिक संस्थाओं के प्रमुखों की जिम्मेदारी होगी कि वे प्रत्येक वर्ष 30 सितम्बर तक दाखिल विद्यार्थियों (देश वार) की पूरी सूची और उनके पाठ्यक्रमों, पासपोर्ट संबंधी विवरण, उनसे लिए जाने वाले शुल्क तथा उनका आवासीय पता मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, (तकनीकी अनुभाग III), शास्त्री भवन, नई दिल्ली को भेजे। यह सूची अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् तथा विदेश मंत्रालय (छात्र कोष्ठ), अकबर भवन, नई दिल्ली को भी भेजी जानी चाहिए। शैक्षिक सत्र 2003-2004 के लिए पहले से ही किए गए दाखिलों अथवा इसके बाद किए जाने वाले दाखिलों पर यह अधिसूचना लागू होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की प्रति निम्नलिखित को भेजी जाए :--

1. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली
2. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली
3. भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली
4. सभी भारतीय विश्वविद्यालयों/सम विश्वविद्यालयों के कुलपति
5. सभी आई.आई.टी./एन.आई.टी. के निदेशक
6. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली
7. विदेश स्थित सभी भारतीय मिशन
8. भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग
9. सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के मुख्य सचिव

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचनार्थ भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

डा. जी. एल. जाम्भूलकर
उप-शिक्षा सलाहकार

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January, 2004

No. 102-pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the **"Kirti Chakra"** to the undermentioned persons for the acts of conspicuous gallantry:-

1. **CONSTABLE C. STANLY, BSF (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award: **3 July 2002**)

On 3 July 2002, after receiving a specific information regarding presence of terrorists in a house in village Chak Ichhagoze, District Pulwama (J&K), the targeted house was cordoned off by a party of 10 Bn BSF. Constable C. Stanly alongwith another Constable was in the process of taking positions at a vital point to cover the escape lanes when one terrorist opened heavy volume of fire on them from the top floor. The fire was immediately retaliated by both the Constables as a result of which, the terrorist shifted his position into a room on the ground floor and continued firing. During this exchange of fire, Constable C Stanly sustained a bullet injury in his right leg. Undeterred and without caring for his injury, he continued to cover the rear escape route from the house and asked his colleague to keep the lane behind the house under effective fire. Meanwhile Constable Stanly observed a terrorist jumping out of the house. Disregarding his personal safety and the bullet injury, he shifted his position and kept on firing in all directions. In order to have a clear view of the terrorist, he came out in the open and physically covered the escape route of the terrorist. However, in the process one bullet fired by the terrorists hit him in the stomach. Despite his fatal injury, with all the grit and determination, Constable Stanly fired a long burst at the

terrorist and killed him on the spot. Constable Stanly then collapsed and succumbed to his injuries.

Constable C. Stanly showed bold initiative, extra-ordinary courage and conspicuous bravery in facing the terrorists and made the supreme sacrifice.

2. **IC-51821 MAJOR AJAY KOTHIYAL, SC**
4 GARHWAL RIFLES

(Effective date of the award: **13 May 2003**)

On being informed by his surveillance detachment regarding movement of terrorists, Major Ajay Kothiyal quickly formulated a tactical plan to track the movement of terrorists with a party, while himself led the strike team by another route, surrounded the area into which the terrorists had moved in and stealthily lay in wait the whole night.

At 1100 hours on 13 May 2003, as the terrorists emerged from the dhoks, he immediately engaged them. Four terrorists in a desperate bid to escape charged toward him firing. Major Ajay Kothiyal not caring for his personal safety and displaying raw courage, effectively confronted the terrorists, cut off the escape route and with accurate fire killed four terrorists. His deft planning and surgical execution of the operation led to elimination of the complete group of seven terrorists.

Major Ajay Kothiyal, SC, displayed presence of mind, raw courage, meticulous planning and conspicuous bravery of a high order while fighting the terrorists.

BARUN MITRA
DIRECTOR

No. 103-pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the "**Bar to Shaurya Chakra**" to the undermentioned person for the acts of gallantry:-

IC-45120 LIEUTENANT COLONEL KANWAR JAIDEEP SINGH, SC, SM 5 DOGRA (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **18 August 2002**)

Lt Col Kanwar Jaideep Singh was commanding a unit on the Line of Control. The Unit was holding the widest and one of the most difficult sectors sensitive to enemy action and terrorist infiltration. He motivated and led his battalion to achieve complete ascendancy over the enemy and caused him heavy causalities.

On 18 August 2002 at 1530 hours Lt Col Kanwar Jaideep Singh's reconnaissance patrol had a chance encounter with a group of infiltrating terrorists wounding one soldier. He immediately engaged the terrorists with disregard to his personal safety and evacuated the wounded soldier to safety. To prevent terrorists from escaping, he reorganized a reinforced patrol to follow and destroy them. While pursuing the terrorists the patrol came under fire from a second group of concealed terrorists. He boldly led his men, causing causalities to the terrorists and compelling them to flee. In this fierce encounter he was hit in the neck and succumbed to his injury while encouraging his men to move forward.

Lt Col Kanwar Jaideep Singh, SC, SM led his team from the front and set an example by making the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

BARUN MITRA
DIRECTOR

No. 104-pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the "**Shaurya Chakra**" to the undermentioned persons for the acts of gallantry:-

1. **GS-163981Y OPERATOR EXCAVATING MACHINERY MOHAN SINGH (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : **04 Jan 2003**)

Operator Excavating Machinery Mohan Singh was deployed as a dozer operator at detachment Aboi for formation cutting, of road Aboi-Tohok which is a very vital road link of Mon District in Nagaland state.

On 04 January 2003 in the morning at 1100 Hrs when formation cutting, work was in progress, suddenly OEM Mohan Singh saw a huge land mass coming from hill side. He did not run away and to save the Dozer from likely damage, he tried to withdraw the Dozer fro slide portion and in the process he was hit in the neck by a boulder which came alongwith slide. He was declared dead same day because of the injuries sustained by the falling boulders. The Dozer was saved due to the extra ordinary courage and devotion to duty of Operator Excavating Machinery Mohan Singh.

Operator Excavating Machinery Mohan Singh, thus, demonstrated extra ordinary devotion to duty, raw courage and made the supreme sacrifice in performing his duty.

2. **GS-160559W OPERATOR EXCAVATING MACHINERY C CHANDRA SEKAR (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : **10 Jan 2003**)

Operator Excavating Machinery C Chandra Sekar was deployed on a Dozer on formation cutting of Lawngtlai-Diltlang-Parva road

located at tri-junction of three nations viz. India, Bangladesh and Myanmar.

On 10 January 2003, he was atop his machine doing the formation cutting between Km 161 and 162. The stretch of work on that day was a tricky one and each forward motion of the dozer was fraught with danger. With his indomitable courage and fighting spirit OEM C Chandra Sekar was tackling that stretch without any fear. At one point, the dozer got tilted and started slipping but OEM C Chandra Sekar did not desert his machine but with a extraordinary presence of mind and operating skill retrieved the machine and succeeded in moving it towards the hill side. When the machine neared the hill-side, there was a sudden and heavy land slide, which was only an inexplicable act of nature. OEM C Chandra Sekar got buried with his machine. Only his head was visible. But never once did OEM C Chandra Sekar panic. He upheld his courage and calm poise. The labourers removed the slide around him, lifted him up and brought him down. He sustained serious internal injuries, due to which he breathed his last later.

Operator Excavating Machinery C Chandra Sekar displayed exceptional act of bravery, exemplary dedication and made the supreme sacrifice while performing his duty.

3. **2488452 SEPOY TARUN KUMAR**
16 PUNJAB

(Effective date of the award : **18 Feb 2003**)

Based on specific information about move of rations two ambushes were laid in general area at 1820 hrs. At 2100 hrs one party observed a truck entering the site. On being challenged they resorted to indiscriminate firing, lobbed grenades and attempted to flee. Sensing the terrorists might escape into the dense secondary jungles to the North and into Bhutan, Sepoy Tarun Kumar chased the fleeing terrorists and shot one terrorist dead.

Meanwhile the other two terrorists took cover behind a cutting and hurled a grenade at Sep Tarun Kumar. Displaying excellent battle craft under the cover provided by his buddy he crawled forward in the rock strewn nala bed and shot dead one of the terrorists at close quarters. Later Sepoy Tarun Kumar provided effective covering fire to his buddy who in turn shot dead the third terrorist. In all three terrorists were killed and one 7.65 mm Beretta pistol, one 12 Bore SBBL, ammunition and large quantity of rations were recovered.

Sep Tarun Kumar displayed presence of mind and conspicuous gallantry of exceptionally high order in the face of terrorist's fire.

4. **GS-173753K OPERATOR EXCAVATING MACHINERY KAMALESHWAR SINGH**

(Effective date of the award : **19 Feb 2003**)

Operator Excavating Machinery Kamaleshwar Singh was detailed for winter snow clearance at Km 39 on Leh-Chalunka road. During winter, nature's adversities are at its worst with heavy snowfall, wind speed and temperatures ranging from (-) 15° C to (-) 35° C in this road sector.

During the night of 19th-20th Feb 03, there was heavy snowfall unprecedented for the season and the whole road sector was blocked by massive accumulation of snow. Despite the ever-present danger of an avalanche, Operator Excavating Machinery Kamleshwar Singh driven by a sense of duty ventured to clear the road with his bulldozer. Unmindful of the imminent danger of snow avalanches and caving up of the snow accumulation Operator Excavating Machinery Singh kept on clearing the snow. And then the snow avalanche came which buried Operator Excavating Machinery Kamaleshwar Singh along with his dozer. He was rescued with a great difficulty. Inspite of this near brush with death Operator Excavating Machinery Singh after recovering kept on working relentlessly.

Operator Excavating Machinery Kamaleshwar Singh showed exemplary courage, determination, devotion and dedication to duty.

5. **SS-37489 MAJOR KISHAN BAHADUR GURUNG**
2/4 GORKHA RIFLES

(Effective date of the award : **22 Feb 2003**)

On 22 Feb 2003 after receiving intelligence input regarding presence of a group of terrorists in Poonch District, Jammu & Kashmir Major Kishan Bahadur Gurung rushed with his company columns to intercept the group. His unexpected approach straight down the cliff to the suspected area surprised the early warning party posted by terrorists. He quickly cordoned the entire area, thus preventing them from escaping. He conducted the operation with professional maturity, organized the firefight throughout the night under adverse weather conditions, maintained strict fire control to avoid own casualty due to cross firing. One escape attempt by the terrorists was thwarted personally by the officer being located at the exit point. Finally, Major Kishan Bahadur Gurung disregarding his personal safety charged into one dhok and killed four terrorists from an extremely close range.

Major Kishan Bahadur Gurung displayed the highest level of initiative, effective leadership, command and control during adverse weather conditions and raw courage by personally leading the charge in fighting the terrorists.

6. **124384 RIFLEMAN JOSEPH HENTRY**
12 ASSAM RIFLES. (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **11 March 2003**)

Rifleman Joseph Hentry was part of the team that had laid multiple ambushes cum surveillance in Manipur. At 1400 hours on 11 March 2003, six to eight heavily armed terrorists in combat dress were seen moving. The team rush to the area in two sections to block the escape of terrorists.

At 1415 hours, as the terrorists entered the killing area, both the sections of the team opened fire. The terrorists taken by surprise, tried to flee in different directions by splitting in small groups. At this stage, Rifleman Joseph Hentry observed the leading terrorist running across him. Displaying raw courage with utter disregard to his personal safety, he jumped in front of the terrorist and physically blocked his escape. In the ensuing exchange of fire, he killed the terrorist from a close quarters, however he himself sustained a burst of automatic fire in his neck and head and succumbed to his injuries. In the meantime, other team members in a fierce firefight, killed three more terrorists. One AK 56 Rifle, one Magazine and 45 rounds were recovered.

Rifleman Joseph Hentry, thus, displayed raw courage with utter disregard to his personal safety, and made the supreme sacrifice of his life to the nation.

7. **GS-160272Y OPERATOR EXCAVATING MACHINERY G RAMALINGAM (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : **13 March 2003**)

Operator Excavating Machinery G Ramalingam was deployed for formation widening between Km 5.00 to Km 17 on Phuentsholing Thimpu Highway, which is the life line of BHUTAN connecting the capital and other important districts with India.

The road stretch between Km 5.00 to 17.00 passes through middle of a hill slope with loose soil/ boulders. The condition of the road is often worsened due to thick fog, incessant rain and omni-present leeches in the area. The formation widening proved all the more difficult due to unstable geological strata all along the road stretch. In view of his vast experience and excellent skill, Dozer Operator G Ramalingam was deployed in this area for formation widening.

On 13 March 2003, while he was engrossed in his work, operating the dozer at Km 11.80 for formation widening, a heavy slide from upper hill portion started to come down. He was cautioned about the slide but absolutely unmindful of his own safety, Operator G Ramalingam used the fraction of the time to move back the dozer so as to save the costly dozer. But the heavy slide came down at a greater velocity and the operator alongwith the dozer was buried under the soil. His valiant efforts undoubtedly saved the dozer from major damages but he could not save himself and breathed his last under the landslide.

Operator Excavating Machinery G Ramalingam, thus, displayed exemplary courage, outstanding dedication, unmatched devotion to duty and made the supreme sacrifice while performing his duty.

8. **2485215 LANCE NAIK GAGAN SINGH**
19 PUNJAB (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **14 March 2003**)

Lance Naik Gagan Singh was Radio operator of a company which had launched search & destroy operation in district Udhampur, Jammu & Kashmir.

On 14 March 2003 at around 1350 hours, own troops noticed movement of two terrorists. Stops brought down fire on the fleeing terrorists and eliminated one terrorist. The second terrorist made an attempt to escape in the thickly wooded forest but Lance Naik Gagan Singh alongwith Company Commander chased the fleeing terrorist. The terrorist opened heavy volley of fire on them. Sensing danger to his company commander and other comrades, Lance Naik Gagan Singh pinned down the terrorist with effective fire but sustained gun shot wound on his left leg. Inspite of being injured he chased and spotted the terrorist hiding behind the boulders. He crawled for about 10 meters, reached a position of advantage and with unflinching courage killed the terrorist. In the ensuing fire-fight, he sustained second gun shot wound on lower back. He succumbed to his injuries at Command Hospital, Udhampur.

Lance Naik Gagan Singh displayed conspicuous bravery, exemplary courage and devotion to duty in fighting with the terrorists and made the supreme sacrifice.

9. **IC-54484 MAJOR RANJAN CHENGAPPA ARTILLERY/40 RASHTRIYA RIFLES**

(Effective date of the award : **02 April 2003**)

On 02 April 2003 Major Ranjan Chengappa was the column commander of search columns. During the search operations the officer detected a group of four terrorists hiding in the cover of bushes and fallen tree. Major Ranjan Chengappa displaying excellent minor tactics and presence of mind took cover behind a tree, brought down accurate fire thus eliminating one terrorist immediately. The terrorists retaliated by bringing down heavy volume of fire on the officer. Unmindful of personal safety and displaying raw courage, outstanding leadership and professional acumen the officer crawled to a boulder near the group and lobbed two grenades thus eliminating two more terrorists. All the four hardcore terrorists including the Gp. Commander of the terrorist organization were killed in the Operation.

Major Ranjan Chengappa displayed raw courage, presence of mind, leadership and professionalism in fighting the terrorists.

10. **3987684 NAIK PARKASH CHAND CHOHAN 3 DOGRA**

(Effective date of the award : **09 April 2003**)

On 09 April 2003, Naik Parkash Chand Chohan was part of a search party in the general area in Rajouri District of Jammu & Kashmir. At around 0935 hours, Parkash established contact with two terrorists hiding behind huge boulders. He received a gun shot wound in the initial firefight with the terrorists. Although being grievously injured and bleeding profusely, he refused to break contact and continued to engage the hiding terrorists. Under covering fire provided by his buddy, Naik Parkash Chand Chohan

crawled close to the hiding place of the terrorists and lobbed grenades. The terrorists continued to fire. Finally he moved out of his cover and charged at the hiding terrorists firing from his personal weapon. The two awestruck terrorists were eliminated but in the exchange of fire he received two more gun shot wounds. He allowed his evacuation only after accomplishing his mission.

Naik Parkash Chand Chohan displayed exemplary courage, bravery and devotion to duty in complete disregard to personal safety in eliminating the terrorists.

11. **13763702 PARATROOPER DALIP SINGH**
9 PARA (SPECIAL FORCES)

(Effective date of the award : **12 April 2003**)

Paratrooper Dalip Singh was member of a team of a Battalion of the Parachute Regiment, during operation conducted in general area of Poonch District, J&K.

From his position in the ambush at approximately 1900 hours Paratrooper Dalip Singh noticed movement of three terrorists moving 400 meters east. Realising that the terrorists were getting away Paratrooper Dalip Singh displaying aggressive spirit and initiative immediately set off with his buddy to trap the terrorists. Paratrooper Dalip Singh asked his buddy to deploy and cover his movement and in a swift bold action, making excellent use of ground closed in intercepting the group of terrorists and shot dead two of the group in a close quarter battle. Displaying exceptional courage and with utter disregard to his personal safety Paratrooper Dalip Singh chased another fleeing terrorist who was firing indiscriminately and killed him also at very close quarters.

Paratrooper Dalip Singh displayed exceptional gallantry, great presence of mind, initiative and least concern for his personal safety and single-handedly eliminated three foreign terrorists.

12. **4193303 SEPOY NARENDRA SINGH**
8 KUMAON

(Effective date of the award : **14 April 2003**)

On 14 April 2003, Sepoy Narendra Singh was buddy of the ambush party commander. At 0430 hours, the scouts of the ambush party noticed movement of 8 to 10 persons along the track. When these persons were in close range they were challenged by the party's second in command. The terrorists opened indiscriminate fire and fierce fire fight ensued in which two terrorists were shot dead. Meanwhile two terrorists were spotted attempting to escape and Sepoy Narendra Singh alongwith his Party Commander immediately chased the terrorists unmindful of the heavy volume of fire being brought upon him. While Party Commander engaged and killed one terrorist, Sepoy Narendra Singh started chasing the other, closed in with him and shot him dead from extremely close range. The successful operation led to the recovery of the large number of arms and ammunitions.

Sepoy Narendra Singh, thus, showed offensive spirit, initiative, conspicuous and selfless act of gallantry while fighting the terrorists.

13. **2692200 GRENADIER YASHPAL SINGH**
GRENADIERS/29 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **22 April 2003**)

On 22 April 2003, a cordon and search operation was being conducted in a village in northern sector. House to house search was on. When Grenadier Yashpal Singh and his buddy moved forward to search a particular house, a terrorist rushed out from a cowshed firing indiscriminately at Grenadier Yashpal Singh from point blank range and tried to escape. While the Bullet Proof Jacket stopped most of the burst, one bullet entered the upper chest on getting deflected from the top edge of the plate. Grenadier Yashpal Singh though wounded grievously chased him staggeringly and shot him dead. Second terrorist also rushed out

from the cowshed and fired at Grenadier Yashpal Singh from the rear injuring him further. Undeterred, Grenadier Yashpal Singh turned around, charged at the second terrorist and killed him too before attaining martyrdom.

Grenadier Yashpal Singh displayed exceptionally high standard of bravery, courage and professional acumen while fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

14. **4475890 LANCE NAIK HARMAIL SINGH**
16 SIKH LIGHT INFANTRY

(Effective date of the award : **04 May 2003**)

On 04 May 2003, at 2000 hours, based on the specific information regarding some terrorists moving down South towards Meghalaya through general area, the Company Commander immediately formulated a plan to trap the terrorists in an ambush. Lance Naik Harmail Singh was to lead the lookout party.

At 2300 hours, Lance Naik Harmail Singh, who was alert, noticed two terrorists moving through the dense undergrowth approximately 100 metres East of ambush party. Without wasting a moment, Lance Naik Harmail Singh immediately informed the party commander through a pre-designated signal about this movement. He along with his Company Commander and three ORs moved towards the terrorists to cut off their route. On being challenged, the terrorists immediately opened fire indiscriminately and lobbed grenades whilst taking cover of the dense foliage and broken ground. The party commander ordered for 51 mm Bore illumination to bring down effective fire on the terrorists. As soon as the area was illuminated, Lance Naik Harmail Singh noticed the two terrorists attempting to withdraw and flee. Unmindful of personal safety and showing dogged courage, he jumped out of the cover, and with utter disregard to the heavy volume of fire being brought upon him, rushed close to the terrorists and shot down both the terrorists after a fierce fire fight at extremely close quarters.

Lance Naik Harmail Singh exhibited exceptional presence of mind, skill and raw courage in killing two hardcore terrorists.

15. **SS-37189 MAJOR LAKSHMAN SINGH CHAUHAN**
16 SIKH LIGHT INFANTRY

(Effective date of the award : **09 May 2003**)

Based on specific input regarding movement of terrorists in general area, Maj Lakshman Singh Chauhan led a patrol. At 0820 hours on 09 May 2003 the leading scout spotted a group of four to five terrorists moving. On being challenged the terrorists opened heavy volume of fire on own troops and lobbed grenades. The heavy firefight and continuous manoeuvre continued for 50 minutes during which Maj Lakshman Singh Chauhan displaying exceptional courage, severely injured three terrorists, in a fierce fire fight at perilously close range. One of these terrorists succumbed to his injuries and another terrorist was killed by his buddy.

In a similar display of dynamic leadership and courage, Maj Lakshman Singh, in another operation, personally shot down two terrorists who were in the process of laying IEDs on a wooden bridge on the road. This saved the lives and material of numerous Security Forces personnel who would probably have suffered due to the IED being exploded at a later stage.

Maj Lakshman Singh Chauhan exhibited bold initiative, exceptional courage and effectively curbed the terrorist activities in his area of responsibility.

16. **IC-60520 CAPTAIN KRISHAN YADAV, SM**
ARMY SERVICE CORPS/5 BIHAR

(Effective date of the award : **22 May 2003**)

As a part of a Counter Terrorist Operation on 22 May 2003 Capt Krishan Yadav was Stop Party Commander. On being fired upon, twelve terrorists armed with automatic weapons ran and hid behind boulders. Capt Krishan Yadav saw group of four terrorists firing

from a formidable position pinning down own stop No 1, to facilitate escape of others. Realising the need to eliminate this group, the officer alongwith his buddy crawled hundred meters, closed on and undeterred by heavy automatic fire, killed three terrorists point blank, while the fourth one was killed by his buddy.

Inspired by the brave action of Capt Krishan Yadav the combined actions of other stop parties resulted in elimination of twelve terrorists and recovery of nine AK rifles, three Pistols and a huge quantity of ammunition and explosives.

Capt Krishan Yadav displayed unparalleled raw courage, initiative and dedication in the face of great danger while fighting the terrorists.

17. **JC-578903 SUBEDAR MOHD SADIQ**
15 JAMMU & KASHMIR RIFLES

(Effective date of the award : **27 May 2003**)

On 27 May 2003, Subedar Mohd Sadiq excelled in an operation conducted in the northern sector. On information about move of terrorists group, Sub Sadiq established cordon around southern portion of a forest area. Steep rocky escarpments and dense undergrowth restricted visibility and movement. At approximately 0750 hours, Sub Sadiq observed three terrorists opening fire from thick undergrowth and changing their location. He monitored their movement, relocated his stops and crawled forward over rocky escarpments to close in with terrorists. Maintaining nerves, despite five grenade attacks on him, Sadiq moved upto dangerously close quarters, retaliated violently killing one terrorist instantly and injuring the other two. He swiftly outflanked the area, killed another injured terrorist in a daredevil fire fight, chased the third fleeing terrorist and killed him in a hand to hand fight. Two AK rifles, two radio sets and other war like stores were recovered.

Subedar Mohd Sadiq exhibited conspicuous gallantry, extraordinary initiative and raw courage in fighting the terrorists.

18. **3402400 SEPOY GURTEJ SINGH**
SIKH/16 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **03 June 2003**)

On 03 June 2003, Sepoy Gurtej Singh was deployed as a stop party to cover a terrorist hideout. At approximately 1930 hours, the party came under effective terrorist fire from a hideout. In a desperate bid to escape, three terrorists came outside of the hideout with guns blazing and slipped into the Nala. The fearless young soldier with utter disregard to personal safety picked up his Light Machine Gun and unmindful of the bullets flying past him, closed in to the fleeing terrorists. After a close quarters fight, Sepoy Gurtej overpowered one terrorist, snatched his rifle and killed him. While trying to eliminate other terrorist, he came under heavy volume of fire, sustaining fatal injuries. Despite being grievously injured, Sepoy Gurtej Singh stealthily crawled behind the second terrorist and with a swift manoeuvre flung at him and broke his neck. After killing two terrorists, he continued to engage the third terrorist who was later killed, till he succumbed to his injuries.

Sepoy Gurtej Singh displayed conspicuous bravery, dogged determination, aggressive spirit of exceptional order and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

19. **4555974 HAVILDAR SUBE SINGH**
MAHAR/30 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : **11 June 2003**)

During cordon and search operation in a village in Kupwara District of Jammu & Kashmir on 11 Jun 2003, Hav Sube Singh's party, while carrying out the search of a house, suddenly came under very effective fire from an underground hideout within the house. Realising the safety of his comrades at stake Hav Sube

Singh with utter disregard to his safety, crawled close to the narrow opening of the hideout from which fire was coming and lobbed smoke and high explosive grenades killing two of the four terrorists inside the hideout itself. The third terrorist who tried to come out of the hideout was also shot by him at close range. This gallant act of the Hav Sube Singh resulted in killing of four terrorists and his instantaneous reaction saved the lives of his comrades who were inside the house when the fire fight started.

Hav Sube Singh displayed remarkable initiative, indomitable courage, tenacity and exceptional bravery in fighting with the terrorists.

20. **JC-306681 NAIB SUBEDAR ALISAHIB JAFHERSON ENGINEERS/1 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : **17 June 2003**)

On 17 June 2003, based on a specific input a search and destroy operation was launched in Pulwana District in Jammu & Kashmir. At around 1600 hours Naib Subedar Alisahib Jafherson cordoned off a group of houses where presence of two terrorists was reported. Realising that they have been surrounded from all sides the terrorists tried to sneak out from one of the houses Naib Subedar Alisahib Jafherson immediately brought down accurate aimed fire at close range killing one of the terrorist on the spot. Unmindful of his personal safety Naib Subedar Alisahib Jafherson then intercepted, the other terrorist who was trying to break the cordon and escape. Despite heavy volume of terrorist fire he brought down accurate fire thus killing the terrorist on the spot. Before dying, the terrorist fired a burst hitting Naib Subedar Alisahib Jafherson on the face due to which he later succumbed to the injuries.

Naib Subedar Alisahib Jafherson displayed dauntless courage and gallantry and made supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army while fighting the terrorists.

21. **9096831 RIFLEMAN JAVID AHMAD KHANDAY**
JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY/46 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : **18 June 2003**)

Rifleman Javid Ahmad Khanday operated as a contact man of the unit covert group. On 18 June 2003 under extreme danger of being caught in the cross fire of the terrorists and own fire, he lured a terrorist group into the killing ground, where they were ambushed. In the ensuing fire-fight, in spite of sustaining multiple splinter injuries, Rifleman Javid Ahmad Khanday adopted a stop position for the ambush and shot one terrorist at point blank range fatally injuring him. He eliminated one terrorist and was directly responsible for the elimination of the other.

Rifleman Javid Ahmad Khanday displayed extraordinary presence of mind, conspicuous gallantry while fighting the terrorists.

22. **SS-36831 MAJOR RAKESH SHARMA**
ARTILLERY/18 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : **25 June 2003**)

Major Rakesh Sharma was the company commander of a Post in Northern Sector. On 25 June 2003 the officer after gaining information about the presence of terrorists, meticulously planned an ambush in a nearby village. Displaying ingenuity and maintaining surprise the officer stealthily placed stops and effectively sealed the area. While leading the party to cordon the house, he suddenly came face to face with the terrorists coming out of the house. The officer kept cool and in swift action shot dead two terrorists. The fire-fight ensued in total darkness. The officer using initiative and with utter disregard to own safety crawled to close in with the terrorists. Two of

terrorists charged out firing. The officer shot dead both the terrorists from the flank at point blank range. The officer killed four of the five terrorists killed in the operation.

Major Rakesh Sharma exhibited conspicuous act of gallantry, immaculate planning, raw courage, dare devil action and assertive outstanding leadership in crisis.

23. **2893550 RIFLEMAN DAVINDER SINGH**
RAJPUTANA RIFLES/9 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **26 June 2003**)

On 26 June 2003 at about 1950 hours the inner cordon consisting of Rifleman Davinder Singh came under intense and effective automatic and grenade fire from terrorists occupying a house. Rifleman Davinder Singh silently crawled up to the window of the house and lobbed a grenade inside. Four terrorists charged out of the house firing indiscriminately at the stops. Realising the gravity of the situation, in a swift action, displaying indomitable spirit, Rifleman Davinder Singh jumped out from cover at one's peril and engaged the terrorists in a fierce combat killing one. Despite the adverse situation, he repeatedly exposed himself to terrorists' fire with utter disregard to personal safety. The brave soldier was hit by a burst on his right arm and chest. Though profusely bleeding and sinking, he remained mentally alert and displaying conspicuous courage beyond call of duty he charged towards the terrorists, sprayed the area with his personal weapon, killing another terrorist. Another bullet got embedded in the barrel of his weapon thus jamming the weapon. With utter disregard to his own life he grappled with the third terrorist and in a dare devil hand to hand duel, snatched the terrorist's weapon and shot him at point blank range in a super human effort. Although unable to move, he called his buddy and directed him to eliminate the fourth terrorist. The gallant soldier achieved martyrdom soon after.

Rifleman Davinder Singh displayed conspicuous gallantry, initiative and bold action unmindful of his personal safety in fighting with the terrorists and made the supreme sacrifice.

24. **GS-171109Y OPERATOR EXCAVATING MACHINERY SATHEESAN N (POSTHUMOUS)**

and

25. **GS-171376A MT/DVR MALBINDER SINGH (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : **26 June 2003**)

Operator Excavating Machinery Satheesan N and MT/DVR Malbinder Singh were deployed for maintenance and improvement of road on Jawaharlal Nehru Marg in East district of Sikkim.

On 26th June 2003 after returning from day's work at around 1700 Hrs, they were informed about the road block and active slides at 2 places between Km 21-23 on Jawaharlal Nehru Road. It was raining heavily and the visibility was poor due to fog. OEM Satheesan N alongwith MT/DVR Malabinder Singh without caring for the day's fatigue from hard work immediately proceeded with his JCB for clearance of the slide. The trouble spot was still active with slush and rolling boulders coming down the hill slope. OEM Satheesan N and MT/DVR Malbinder Singh worked relentlessly without caring for their own safety and cleared the slide to ensure that the stranded vehicles and passengers are able to cross the slide.

When the clearance of slide was in final stage, after evacuating all stranded vehicles/passengers, there was flash flood in the Nallah with boulders. It caught the JCB, its operator OEM Satheesan N and MT/DVR Malbinder Singh unaware and presumbly swept away all the three alongwith it into steep valley down hill resulting in the instant death of the Operator and fatal injuries to MT/DVR Malbinder Singh, who succumbed to injuries while being evacuated.

Operator Excavating Machinery Satheesan N and MT/DVR Malbinder Singh displayed raw courage, dogged determination in saving the lives of stranded passengers and the vehicles at the cost of their lives.

26. **JC-225654 SUBEDAR JEET SINGH**
ASSAM/35 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **29 June 2003**)

Subedar Jeet Singh was operating as a search party commander in Pulwama District of Jammu & Kashmir.

During the search at 1500 hours on 29 June 2003, the search party drew heavy volume of fire from terrorists hiding in the nearby Nala. Subedar Jeet Singh quickly reorganized his party and placed a tight cordon blocking the escape routes from the South West direction. Thereafter, he moved ahead with his buddy, closed in on the terrorist and shot dead one terrorist at close quarters. In the meantime another terrorist hiding in the hay stack hurled a grenade towards him, thus wounding him in the lower abdomen. Though partially paralysed, Sub Jeet Singh, unmindful of his own safety, displaying raw courage, grit and determination, charged onto the terrorist eliminated him at point blank range. Thereafter, he succumbed to his injuries.

Subedar Jeet Singh displayed raw courage, dogged determination and total devotion to duty and made the supreme sacrifice in eliminating the terrorists.

27. **IC-52459 MAJOR SURINDER HORA, SM**
MARATHA LIGHT INFANTRY, 17 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : **28 July 2003**)

On receiving information about presence of terrorists in general area in Banihal District, Jammu & Kashmir, Maj Surinder Hora planned and led an operation to eliminate terrorists.

On 28 July 2003 at 1300 hours, sensing some movement about 150 meters away, Maj Surinder Hora stealthily crawled forward with his buddy. They suddenly came face to face with a group of terrorists just 15 meters away. Maj Surinder Hora immediately opened fire and killed one terrorist. The terrorists retaliated with heavy fire and hurled grenades at Maj Surinder Hora. Under

heavy volume of fire, he crawled forward, killed the second terrorist and injured the third terrorist at 10 meters who suddenly charged at him in a suicidal move. Displaying nerves of steel he ducked and caught the barrel of the terrorist's weapon who fired. The burst hit Maj Surinder Hora in both legs. Despite being hit, he continued grappling with the terrorist, wrested away his weapon and shot him dead.

Maj Surinder Hora, thus, displayed aggressive spirit, presence of mind and indomitable courage in killing three terrorists.

28. **IC-45642 LIEUTENANT COLONEL REDDY VENKATESHA**
9 JAT

(Effective date of the award : **18 Sept 2003**)

Lt. Col. Reddy Venkatesha was Second-in-Command of a Jat Regiment Unit deployed on the line of control in Naoshera Sector. On 18th September 2003, strong enemy force attempted raid on own post in Naoshera Sector. Displaying extraordinary bravery and disregard for heavy enemy fire, Lt Col Reddy Venkatesha quickly assembled a fire support group and leading from the front closed in to neutralize raid party. The speed and surprise of fire with which enemy was engaged left him absolutely shocked. He moved ahead braving the heavy barrage of mortar and artillery fire, directing his fire support group resulting in killing of one enemy soldier and destruction of two enemy bunkers across the line of control, being used as fire base. This display of courage under heavy fire motivated the support group to disregard danger and devastate the enemy allowing own Quick Reaction Team to destroy and force the enemy to retreat. His outstanding gallantry resulted in killing of eight enemy soldiers and foiling enemy raid by breaking enemy will to fight.

Lt Col Reddy Venkatesha displayed outstanding boldness, unparalleled aggressiveness and exemplary courage in fighting the terrorists.

29. **IC-57219 MAJOR UDAI SINGH, SM**
22 PARA(SPECIAL FORCES) (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **29 Nov 2003**)

Major Udai Singh had developed a comprehensive schedule to demolish the intelligence and logistics network being provided to the terrorists by the Over Ground Workers in the general area in Rajouri District of Jammu & Kashmir. The officer commenced operations by launching a search and destroy operation in the general area at 0300 hours on 29 Nov 2003. The team physically reconnoitered the thickly forested area. At 1745 hours, in fading light, when the officer was leading his team to lay an ambush, the party suddenly came face to face with a group of terrorists who were approaching from higher ground at a close range of 10 metres. During the deadly firefight that ensued, the officer sustained Gun Shot wound in the neck, while his buddy sustained multiple gun shot wounds. Displaying extraordinary courage, in utter disregard to personal safety, the officer continued to close in with the terrorists, killed one terrorist and wounding another. Major Udai Singh then helped extricating his fatally injured buddy before succumbing to his injuries.

Major Udai Singh displayed indomitable courage and exemplary leadership in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

30. **2252J CONSTABLE RAJ KUMAR**
JAMMU & KASHMIR POLICE (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : **02 Jan 2004**)

On 02 January 2004 at 1850 hours two terrorists opened indiscriminate fire and lobbed grenade at crowded Jammu railway station. On learning about the incident, Quick Reaction Teams of Police and Army rushed to the incident site, Constable Raj Kumar was part of the police party.

At 2020 hours, a terrorist opened indiscriminate fire at the search party. Constable Raj Kumar immediately retaliated and asked search party to take position. He himself kept on advancing with total disregard to his personal safety and in the process sustained multiple gun shot injuries. He fell down on the ground and despite being seriously wounded refused to be evacuated and indicated the location of terrorist to the Leader of Quick Reaction Team which ensured his quick elimination. He later succumbed to the injuries.

Constable Raj Kumar displayed gallantry, raw courage and laid down his life in the true tradition of Indian Police.

BARUN MITRA
DIRECTOR

The 8th June, 2003

No. 101-Pres/2004—The following amendment is made in this Secretariat Notification No. 28-Pres/2000 dated 15th August 1999 published in Part-1 Section-I of the Gazette of India dated 11th March, 2000 relating to the award of "Mention in despatches":—

AT SERIAL NO. 63

FOR :— "WARRANT OFFICER P. K. GOEL (261134), RADAR FITTER"

READ:— "WARRANT OFFICER P. K. GOYAL (262134), RADAR FITTER"

BARUN MITRA
Director

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF SECONDARY & HIGHER EDUCATION)

New Delhi, the 1st June 2004

RESOLUTION

No. 21-2/2003-TS-III—In pursuance of various judicial pronouncements of the Hon'ble Supreme Court of India, the All India Council for Technical Education (AICTE), vide Notification No. 37-3/Legal/2004 dated 21st January 2004 published in the Gazette of India Extraordinary [Part-III Sec. 4] on 26th February 2004, had issued detail regulations concerning admission of Non-Resident Indians (NRIs), Foreign Nationals (FN) and Persons of Indian Origin (PIO) etc in all institutions/University Departments approved by AICTE offering technical courses leading to Diploma, Degree and Post-Graduate Degree in Enginerring & Technology, Architecture & Town Planning, Pharmacy, Applied Arts, MBA, MCA, Hotel Management & Catering Technology etc. Under these regulations, fifteen percent (15%) of seats [approved intake capacity] have been reserved across different disciplines on supernumerary basis for the above-mentioned categories of students including the children of Indian workers in the Gulf Countries.

In the light of the above notification, the question of doing away with the present practice of issuing No. Objection Certificate (NOC) to the Foreign Nationals, NRIs, PIOs etc for pursuing the above mentioned technical courses at under-graduate and post-graduate level in Self-Financing Institutions or University Departments including Deemed Universities or Government funded Institutions was under the consideration of the Government of India. After careful consideration, it has been decided that a NOC from the Government would no longer be required in respect of the above categories of students for pursuing such courses in these institutions and their admission shall be governed by the above notification as amended from time to time. However, it shall be duty of the Head of all such academic institutions admitting above categories of students to furnish a complete list of admitted students (country wise) every year by 30th September giving details of their courses, passport particulars, fee being charged and the residential addresses in India to the Ministry of HRD, Department of Secondary & Higher Education, (Technical Section-III), Shastri Bhavan, New Delhi. This list should also be furnished to AICTE as well as to the Ministry of External Affairs (Students Cell), Akbar Bhavan, New Delhi. This would be applicable for admissions already made or to be made from the Academic Session 2003-2004 onwards.

ORDER

ORDERED that a copy of the resolution be communicated to:—

1. All India Council for Technical Education, New Delhi.
2. University Grants Commission, New Delhi.
3. Association of Indian Universities, New Delhi.
4. Vice-Chancellors of all Indian Universities/Deemed Universities.
5. Directors of all IITs/NITs.
6. Indian Council for Cultural Relations, New Delhi.
7. All the Indian Missions abroad.
8. All the Ministries/Departments of the Government of India.
9. Chief Secretaries of all States & Union Territories.

ORDERED also that the resolution be published in the Gazette of India for general information.

DR. G. L. JAMBHULKAR
Deputy Educational Adviser

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित
एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2004
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND
PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2004